12-8-68 ओम शान्तिः प्रातःक्लास

क्या सोच रहे हो? नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार अब हर एक जीव की आत्मा अपने ऊपर ग्रण्डर रखा रही है। कि हम क्या थे? किसके बच्चे थे, और बराबर बाप से वर्सा मिला था। फिर कैसे हम भूल गये। हम सतोप्रधान दुनियां मे सारे विश्व का मालिक थे। बहुत सुखी थे। फिर हम सीढ़ी उतरे रावण आया गोयाफागी आ गई जो कि हमरचता औररचनाको भूल गये। फागी मे मनुष्य रास्ता आद भूल जाते है नां। तो हम भी भूल गये कि हमारा घर कहा है। कहां के रहने वाले थे। अब बाप देख रहे है हमारे बच्चे आज से 5000वर्ष पहले राज-भाग पा चुके थे। बडे आन्नद मौज मेंथे यही पौधे फिर क्या हो गये। कैसे रावण के राज्य मे आ गये। पुराने राज्य मे तो मे तो जरुर दुःख ही मिलना नां। कितने तुम भटके। अन्धश्रधा मे बाप को ढूंढते रहे। परन्तु मिले कहां जिनको भित्तर ठिक्कर मे डाल दिया तो मिलेगा वो ही फिर कैसे। आधा कल्प तुम भटक-2 कर जैसे कि फां हो गये हो। अपने ही अज्ञान के कारण। रावण राज्य मे तुमने कितना दुःख उठाया है। भारत भक्ति मार्ग में गरीब बनता गया। बाप बच्चो को देखते है तो खयाल होता है कि भक्ति मार्ग में कितना भटके है। आधा कल्प भक्ति की है। किस लिये? भगवान को मिलने के लिये। भक्ति के बाद मे ही भगवान फल देते है। वो तो कोई भी जानते नही है। बिलकुल ही बुधु बन गये है। यह सब बाते बुधी मे आनी चाहिये। हम क्या थे फिर कैसे राजभाग करते थे? फिर कैसे सीढ़ी उतरते रावण की दुविधा जंजीर में बंधते गये। अपरमअपार दुःख है। पहले-2 तो तुम अपरमअपार सुख मे थे। फिर बाद मे अपरमअपार दुःखो में ओय हो। दिल मे आना चाहिये कि अपने ही राज्य मे कितना सुख था। फिर पुरानी दुनियां मे कितना दुःख उठाया है। जैसे वो लोग समझते है रावण राज्य राज्य मे तुमने कितना दुःख उठाया है। वास्तव मे थे बहुत अच्छे। यह उनको पता ही नही है कि तमोप्रधान सृष्टी मे तो दिन प्रति दिन नीचे ही उतरते आये है। पहले-2 रावण के राज्य मे तो फिर भी रजो थे। अब तो तमोप्रधान बन गये है। अभी तुम बैठे हो अन्दर मे यह खयाल चलना चाहिये हम कौन थे। किनके बच्चे थे। बाप बाप ने तो हमको सारे विश्व का राज्य दिया फिर कैस हम रावण राज्य मे जकडे गये। कितने दुःख देखें। कितने गन्दे काम किये। सृष्टि दिन प्रति दिन और ही गिरती जाती है। मनुष्यों के संस्कार दिन प्रति दिन क्रिमनल होते जाते है। तो यह बच्चो को स्मृती मे आना चाहिये। बाप देखते है यह पवित्र पौधे थे जिनको राज-भाग दिया वो फिर मेरे ही आक्यूपेशन को भूल गये। अभी तुम फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना चाहते हो तो मुझ बाप को याद करो तो सभी पाप कट जावेंगे परन्तु याद कर नही सकते है। बार-2 कहते है बाबा हम भूल जाते है। अरे तुम याद नही करोगे तो पाप कैस कटेंगे। एक तो तुम विकारो मे गिर कर पतित बने और फिर बाप को गाली भी देने लगें। रावण राज्य मे आकर तुम हमारे भी दुश्मन बन गये हो माया के संग में। इतना तो तुम गिर पडे हो कि जिसने तुमको आसमान पर चढ़ाया उनको ही ठिक्कर-भित्तर मे ले गये। माया के संग मे तुमने ऐसा काम किया है। बुधी मे आना चाहिये नां एकदम पत्थर बुधी तो नही बनना चाहिये। बाप रोज-2 कहते है मे तुमको फर्स्ट क्लास पुआईन्टस सुनाता हूं जैसे बाम्बे में संगठन हुआ तो बुला सकते है। बाप कहते है हे भारतवासियों तुमको हमने सदैव ही राजभाग दिया। तुम आदी सनातन देवी देवतोय स्वर्ग मे थे फिर तुम रावण राज्य मे कैस आये। यह भी ड्रामा मे पार्ट है। तुम रचता और रचना के आः मः अः को समझो तो ऊंच पद पा सकते हो। मेरे को याद करते रहो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे यहां पर मेल सभी बैठे है परन्तु किनकी बुधी कहां पर किनकी कहां पर है। बुधी में यह आना चाहिये कि हम कहां पर थे। अब हम पुराने रावण राज्य मे आकर पडे है। तो कितने दुःखी हुये है हम शिवालय मे तो सभी सुखी थे। अब बाप आये है वेशालय से निकालने के लिये। तो भी निकलते ही नां है। बाप कहते है तुम शिवालय चलोगे? फिर वहां पर यह विख नही मिलेगा। यहां का गन्दा खान-पान नां मिलेगा। यह तो विश्व का मालिक थे नां। फिर यह कहां पर गये। यह भी तुम बच्चे जानते हो कि इन्होने 84जन्म लिये है। फिर ये अब अपना राज-भाग ले रहे है। कितना सहज है। यहे तो बाप समझाते है सब

सर्विसबुल नही होगें। नम्बरवार राजधानी स्थापन होनी है। तो जरूर सारी अवस्थाओ वाले चाहिये नां। समझाना चाहिये कि हमको फिर से श्रीमत पर राजधानी स्थापन करनी है 5000वर्ष पहले की थी। तमोप्रधान से फिर सतो-प्रधान बनना है। बाप कहते है कि यह तो है ही तमोप्रधान पुरानी दुनियां। रेक्यूरेट पुरानी जब होगी तो ही तो बाप आवेंगे नां। बाप बिना तो कोई भी समझा नही सकते है। भगवान इस रथ मे हमको पढ़ा रहे है। यही याद रहे तो भी बहुत खुशी मे रह सकते है। अब हम ईश्वरिय सम्प्रदाय है फिर देवी सम्प्रदाय बनने वाले है। अगर यह बुधी मे ज्ञान हो तो औरो को बता कर भी आप समान बनाने वां। बाप समझाते है कि पहले तो तुम पूरे मैड चैप्स थे। कितनो की बुधी से तो अभी भी मैड पना निकलता ही नही है। क्रिमनल कैरेक्टर सुधरता ही नही है। आत्मो की तो क्रिमनलटी निकलती ही नही हैं। एक तो है काम विकार की क्रिमनलटी वो भी मुशकल ही छूटती है। फिर साथ मे पाचं विकारहै। क्रोध की क्रिमनलटी भी कितनी है। बैठे-2 ही भूत आ आ जाता है। यह भी क्रिमलनटी हुई नां। सिवलाईज तो हुआ ही नही है। नतीजा क्या होगा। सोणा पाप चढ़ जावेगा। बास-2 क्रोध करते रहेंगे। बाप समझाते है कि तुम रावण के राज्य मे तो नही हो नां। तुम तो ईश्वर के पास बैठे हुये हो तो फिर इन विकारो से छूटने की प्रतिज्ञा करनी चाहिये। बाप कहते है कि अब मुझे याद करो। क्रोध मत करो। पाचं विकार तो तुमको आधा कल्प भर ही गिराते आये है। सबेस ऊंचे भी तुम ही थे। सबेस जास्ती गिरे हुये भी तुम ही हो। इन पाचं भूतो ने तुमको गिराया है। तुम बिलकुल बन्दर से भी बदतर बन गये हो। कल तो तुम बन्दर थे पाच विकार तुम्हारे मे थे। अब शिवालय मे जाने के लिये पाच विकारो को निकालना है। इस वेशालय से अब दिल हटाते रहो। बापबाप को याद करो तो अन्तमते सो गते हो जावेगी। तुम घर पहुचं जाओगें। और तो कोई भी यह रास्ता बता ही नही सकता। गुरु आद लोग जो अपने को परमात्मा कहलाते हैउनको हरणाकश्यप कहा जाता है। वो है सबेस बडे दैत्य। तुम कह सकते हो। ममां ने जब इनको पत्र लिखा थाउसमे शायद ऐसे-2 अक्षर थे। जिसेस ही उनको बुखार चढ़ा हुआ है। बात तो ठीक ही लिखी हुई है। भगवोनोवाच्यः-मैने तो कब भी कहा नही है कि मै सर्वव्यापी हूं। मैन तो राजयोग सिखाया, और कहा कि तुमको तुमको विश्व का मालिक बनाता हूं। फि वहां तो इस नालेज की दरकार ही नही रहती है। मनुष्य से देवता बन जाते है। अर्थात तुम वंसा पा लेते हो सूर्यवंशी और चन्द्रवंशी का। सन्यासी कुछ भी जानते थोडे ही है। यह तो बाप बाप ही जानते है जो तुम आत्माओं को बताते है। इसमे तो कोई भी हठ योग आद की बात ह नही। बाप कहते है अपने कों आत्मा समझो। तुम अपेन को शरीर क्यो समझते हो। शरीरसमझने से फिर ज्ञान उठा नही सकते है। यह भी भावी। तुम समझते हो कि हम रावण राज्य मे थे। अब फिर रामराज्य मे जाने लिये पुरुर्थाथ कर रहे है। अब हम कलयुग वासी नही है। पुरुषोत्तम संगम के वासी है। भल घर मे भी रहो। इतने सोर यहां पर कहां रहेंगे। ब्राहम्ण बन कर भी सबब्रहमा के पास नही रह सकते है। रहना भी अपने-2 घर मे है। और बुधी से समझना है कि हम क्षुद्र नही हम ब्राहम्ण है। क्षुद्रो से धीरे-2 अलग होते जाते है। कोशिश करते है कि हम अलग रहे। साथमे रहने से फिर रिवटपिट चलती रहती है। क्योकि उनकी है मैजारटी। तुम ब्राहम्ण हो मैनारटी। तुम ब्राहम्णों की चोटी कितनी छोटी है। तो गृहस्थ मे रहते हुये शरीर निर्वाह अर्थ धन्धा आद भी करना है। सिर्फ अपेन को आत्मा समझो बाप को याद करो। हम क्या थे। अब हम पुराने राज्य मे बैठे हुये है। अब बाप फिर हमको ले जाते है। तो गृहस्थ व्यवहार मे रहते हुये वो अवस्था जमानी है। फिर छांटा छूंटी होगी। कोइ निकल आवेंगे। शुरु मे कितने बडे-2 झाड आये फिर उनेस कोई ही रहे। बाकी सब चले गये। तुम्हारी बुधी मे है कि हम तो अपने राज्य मे थे। फिर अब कहां पर आकर पडे है। फिर हम अपने राज्य मे जाते है। 84का चक्र लगाया अब फिर वर्ल्ड की हिस्ट्री जर्गाफी रिपीट होती है। तुम देखते हो कहते हो बाबा फलाना बहुत अच्छा रेग्यूलर था। फिर आता नही। नां आते है तो गोया विकार मे गिरे है। फिर ज्ञान की धारना हो नही सकती। उन्नती के बदले और ह पाई पैस का पद पा लेगें। कहां परराजा और कहांयहनीच

पद समझ तो सकते है नां। भल सुख तो वहां पर है ही। परन्तु पुरुषार्थ किया जाता है ऊंच पद पाने का। बडा पद कौन पा सकते है यहतो कोई भी समझ सकते है। अभी सब पुरुषार्थ कर रहे है। किंग महेन्द्र (आगरा वाला महेन्द्र) भी पुरुषार्थ कर रहा है। वो तो पाईपैस का किंग है। यह तो सूर्यवंशी राजधानी मे जाने वाला है। पुरुषार्थ ऐसा है जो कि विजय माला मे जा सकता है। बाप बच्चो को समझाते है कि अपने ही दिल में जांच करते रहना है। हमारी आत्मा कहीं पर क्रिमनल काम तो नही करती है। कुछ नां कुछ करती ही रहेगी। ऐसे कोई भी कह नही सकता है कि हमारी आत्मा क्रिमनल काम नही करती है। अगर सिवलाईज्ड हो जाव तो फिर बाकी क्या चाहिये। भल विकार मे नही जावेंगे परन्तु कुछ नां कुछ आत्मा धोखा देती ही रहेगी। जब तक कि कर्मातीत अवस्था हो जावे। नम्बरवन तो काम की क्रिमनलआईज्ड बहुत खराब है। इसलिये ही नाम है क्रिमनलआईज्ड। सिवलाईज्ड। बेहद का बाप बच्चो को जानते तो है नां। यह क्या काम करते है। कितनी सर्विस करते है। फलाने की क्रिमनलआत्मा अभी गई नही है। अब गुप्त समाचार आते है। आगे चलकर तो और भी ऐक्यूरेट लिखेंगे। खुद भी महसूस करेंगे कि हम तो इतना समय तक झूठ बोलते खेदही गिरते आये है। ज्ञान पुरा बुधी मे बैठा नही है। यह कारण था जो कि हमारी अवस्था नही बनी। बाप से हम छुपाते रहे। ऐसे बहुत देर छुपाते है। सजन से पाच विकारो की बिमारी छुपानी नही चाहिये। सच्च-2 बताना चाहिये हमारी बुधी इस-2 तरफ जाती है। शिव बाबा तरफ नही जाती है। बताते नही है तो वो बुधी को पाते रहते है। अब बाप समझाते है कि बच्चे देही-अभिमानी बनो। अपने को आत्मा समझो। भाई-2 समझो। तुम कितने सुखी थे जबकि पुज्य थे तो। अब तुम पुजारी दुःखी बन गये हो। भक्ति से तो तुम नास्तिक बन गये हो। सब कहते है यह गृहस्थ आश्रम तो परमपरा से ही चला आता है। क्या राम, सीता को बच्चे नही थे। वहां बच्चे नही होते? और वो तो है ही सर्म्पूण निरविकारी। वहां पर भ्रष्टाचार से पैदायश नही होतीहै। विकार नही थे। वहा यह रा राज्य होता नही। तुम बिना अर्थसमझ कर बकते रहते हो। अपने को समझते नही हो कि हम रावण राज्य मे है। अभी तुमको पता पडा है। रावण को जलाते रहते है जबसे रावण का राज्य शुरु हुआ है। जलाते है परन्तु जलता नही है। यह समझते नही है कि अभी तक भी रावण का राज्य है। वहां तो रामराज्य है वहां रावण कहां से आया। मनुष्यों की बुधी तो बिलकुल ही चटखाते मे है। किसने की? इन गुरुओ नें। शास्त्रो नें। मैंने तुम्हारा बेडा पार किया सतोप्रधान बनाया। फिर तुमको तमोप्रधान किसने बनाया। रावण नें। तुम भूल गये हो? कहते है यह तो परमपरा से ही चला आता है। अरे परमपरा भी तो कबसे? कोई भी हिसाब तो बताओं। कुछ भी समझते नही है। बाप समझाते है कि तुम ो राज्यभाग देकर गये। तुम भारतवासी बहुत ही सुखी थे। और कोई था ही नही। कृष्चन भी कहते है कि पैराडाईज था। चित्र भी देवताओ के है। इनसे कोई भी पुरानी चीज तो है ही नही। पुराने ते पुराने यह ल- न होगें यां इनकी कोई वस्तु होगी। सबसे पुराने ते पुराना यह है कृष्ण। नये ते नया भी कृष्ण ही था। पुरानेते पुराना क्यो कहते है कि पास्ट हो गया है नां। बाप ने समझाया है कि तुम ही गौर थे फिर सावरे बने हो। बाप अर्थ बैठ समझाते है। सांवरा कृष्ण देखकर भी बहुत खुश होते है। झूले मे भी सावरे को ही झूलावेंगे। उनको क्या पता कि गौरा कब था क्या था। कृष्ण को कितना प्यार करते है। राधा ने क्या किया। तो बाप कितना समझाते रहते है। यहां तो तुम सत्य के संग मे बैठे हो। बाहर कुसंग मे जाने से फिर सब भूल जाते हो। माया बहुतप्र बल है। ऐसे भी है जो कि अभी भागे के भागे। थोडा भी अपना अंहकार आने से और ही अपनी सत्यानाश कर लेते है। बेहद का बाप तो समझानी ही देंगे नां। इसमे फ्र फंक नां होना चाहिये बाबा ने ऐसा मुझे क्यो कहा? हमारी इज्जत गई। अरे इ ईजत तो रावण राज्य मे चट हो ही चुकीहै देहअभिमान मे आने से अपना ही नुकसान कर देंगे। पद भ्रष्ट हो जावेगा। क्रोध करना भी क्रिमनल ओय है। लोभ भी, आत्मा से चीज देखी है तो ही लोभ आता है। बाप आकर अपना बगीचा देखते है। किस-2 किस्म के फूल है। आगे तो यहां से जाकरफिर उस बगीचे

देखते थे। शिव बाबा को फूल भी बरोबर चढ़ाते है वो तो है निराकार। यह चैतन फूल है। तो अभी तुम पुरु
षार्थ करके ऐसा फूल बनते हो। फिर वहां तो रावण राज्य ही नही। बाप तो समझाते रहते है मीठे-2 बच्चे
जो कुछ भी बीते उसको ड्रामा समझो। विचार नां करो कि कितनी मेहनत करते है। होता तो कुछ भी नही है।
ठहरते ही नही है। अरे प्रजा भी तो चाहिये ही नां। थोडा भी सुना तो वो भी प्रजा हो गई। प्रजा तो
ढेर बननी है। ज्ञान कब भी विनाश को नही पाता है। एक बार ही सुना शिव बाबा है। तो भी बस है।
प्रजा मे आ ही जायेंगे। तुम बच्चे तो आये हो नर से नारायण बनने तो पुरा पुरुषार्थ करो। अन्दर मे यह याद
आनी चाहियेहम जिस राज्य मे थेवो ही फिर से अब पा रहे है। वहां पर अपरमअपार सुख होगें। यहां
अपरमअपार दुःख है। इसके लिये फिर पुरा पुरुषार्थ करना चाहिये। बिलकुल ही ऐक्यूरेट सर्विस हो रही है।
पाई का भी फर्क नही है। अच्छा साहब के साहबजादो प्रितनम्बरवार याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते—
16-8-68रात्री क्लासः—पास्ट जो हुआ उसका कुछ कर नही सकते है। समझा सकते है कि आगे के लिये ऐसे
ठीक कर देना चाहिये। इस समय तुमफिर्क से फारिग बन रहे हो। 21 जन्मो के लिये। वहां पर कोई भी फिकरात
नही होती है। अब तुम सीख रहे हो। जो बीता ड्रामा। फिर्क नही करना चाहिये। कोई भी नुकसान होता है तो
ड्रामा। यहां पर तो अनेक प्रकार के नुकसान आद होते रहते है। कर्मातीत अवस्था तो कोई की भी नही है।
पुरुषार्थ कर रहे है कि कोई भी बात का फिर्क नही रहे। समय बाकी थोडा है। बाप धैर्य देते है। तुम कितना समय
समय फिर्क मे रहे हो। जब से रावण राज्य शुरुआ है सीढ़ी उतरते ही आये हो। इस नालेज का भी तुमको मालूम
है। जितना होशियार होते जाओगें उतना ही झाड बढ़ता जावेगा। इसमे मूंझने की बात ही नही है। राजधानी स्
स्थापन होनी है। बच्चो का तो काम है पुरुषार्थ कर अपना जीवन ऊंचा बनाना। इस समय ऊंच होगे तो
जन्मजन्मान्तर कल्पकल्पान्तर ऊंच हो जाओगें। जो जितना चाहे पुरुषार्थ से वो पद पा सकता है। जितनी भी
प्रजा बनानी चाहो। यह समझ की बात है। एक तो बाप को बहुत याद करना है। भक्ति मे भी याद करते थे।
बाबा आप जब आवेंगे तो हम आपके ही बनेंगे। दुसरा नां कोई। यह किसने कहा? आत्मा ने। जब भी किसीको
समझाते हो तो पहले-2 यह बात बताओ कि हम सब आत्मायें भाई-2 है। बेहद के बाप से हम बेहद के
बच्चो को वर्सा मिलना है। कौनसा वर्सा। सुख और शान्तिः का। हम पहले सुखधाम में थे तो सब शान्तिः धाम
मे थे। नां अशान्ति नां ही दुःख था। और बरोबर भारत ही था। सूर्यवंशी बनना अच्छा है। फिर दो कला कम हो जा
जाती है। सतयुग मे सतोप्रधान थे। वहां जितना सुख भोग त्रेता मे तो जरूर कुछ कम ही होगा। पुरुषार्थ कर
सतोप्रधान बनना है। याद की यात्रा से। यही है मूल बात। उपनी ही तरक्की करने की। सभी को यही समझाना
है। हम भाई-2 है पहले तो यही निश्चय करना है। हम आत्मायें है एक बाप के बच्चे है। बहुत सहज करके
समझाना है। यहां मनुष्यों को तो बहुत ही दुःख है। बाप है ही दुःख हर्ता सुख कर्ता। अपार दुःखो और अप
सुखो का यही है संगम। बाप को यसद करते-2 सतोप्रधान बनना है। दैवी गुण धारन करने है। मौत
सामने खडा है। बस। स्थापना तो होनी ही है। 15-8-68:-रात्री क्लास(आज बाम्बे की टेप जिसमे कि कुमारिका
का भाषण भरा हुआ था सो सुन रहे थे)तुम माताओं का तो अब बोल बाला होना ही है। आगे तो कब भी
फीमेल आद को प्राईमिनस्टर आद नही बनाते थे। अब तो प्रेजहडण्टस आद भी बनाते रहते है। यह सब है
माया का पम्प। गवर्नर भी फीमेल्स होती है। तुम बच्चे जानते हो अब अपनी राजधानी स्थापन होनी ही है।
जब स्थापना पुरी हो तो तब ही लडाई भी शुरु हो। अभी देरी है। दिन प्रति दिन पुआईन्टस भी निकलती रहती
है। बाबा नेबताया हैदुःखधाम का दुख, सुखधाम का सुख यह भी सब एक दिल छपावेगें। ~~अपार~~ अपार दुःख
है। अपार सुख थे। अब नही है। फिर रिपीट करेंगे। बाप कहते है मुझे याद करो तो विश्व का मालिक बन जावेंगे

बड़ी-2 सभा मे भाषण करने की भी हिम्मत चाहिये। फर्क भी हो जाते है नां। दो पांच है जो कि बड़ी-2
सभी मे भाषण कर सकती है। समझते तो है ना कि फलाणी-2 हमसे होशियार है। हम इतना भाषण नही
कर सकते है। स्कूल मे कोई अच्छी रीतीउठाते है। तो सभी बच्चो को भाषण आद करना सीखना है। ओम